श्री राम चन्द्र मिशन®

India ECHOES

ONE WORLD ONE HUMANITY

2012 नये साल के लिये शुभकामनायें

कई दिन के सुस्तीभरे एवं बरसात के मौसम के बाद १ जनवरी २०१२ का उदय एक साफ आसमान के साथ हुआ। पिछले दो दिनों की बारिश ने वातावरण में ताज़गी भर दी। आश्रम अभ्यासियों से खचाखच भरा हुआ था जोकि अपने प्रियतम गुरुदेव की एक झलक पाने, नववर्ष की शुरूआत नये सिरे से प्रतिबद्ध एवं केन्द्रित होकर करने के लिये लालायित थे। ध्यान आरम्भ होने के समय मौसम साफ था लेकिन गुरुदेव के "दॅट्स ऑल" ("पूजा समाप्त करें") कहने के तुरन्त बाद, बारिश शुरु हो गई । ये बूंदा-बांदी से शुरु हुई और जोर पकड़ते-पकड़ते एक भारी बरसात में बदल गई। गुरुदेव मजबूर होकर ध्यानकक्ष में रुके रहे और हम सबके साथ समय बिताया। भाई चक्रपाणी तमिल में बोले और कहा कि कैसे गुरुदेव हमारी मदद करते हैं और हमें उन्नति करते हुए देखकर ऐसे प्रसन्न होते हैं जैसे एक माँ अपने बच्चे को पहला कदम उठाने में मदद करती है और खुद उसे ऐसा करते हुए देखकर खुश होती है। उन्होंने आगे कहा कि जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, यह हमारी जिम्मेदारी हो जाती है कि सबसे पहले हम गुरुदेव को ये दिखायें कि अब हम अपनी देखभाल करने में सक्षम हैं। यह इस अर्थ में है कि हम गुरुदेव को परेशान न करें, उनकी चिन्ता का कारण न बने तथा हम आध्यात्मिक मार्ग में जिम्मेदार व्यक्ति बन जायें। बहन निहारिका ने अपनी कुछ कवितायें सुनाकर हर एक के हृदय को गुरुदेव के प्रेम से भर दिया। बारिश अभी भी हो रही थी लेकिन गुरुदेव वापस अपनी कॉटेज में चले गये।

गुरुदेव पूरे दिन थकावट के बावज़ूद अभ्यासियों के कई समूहों से मिलते रहे। शाम के खाने का समय होने तक वे एकदम थक चुके थे उन्हें देखकर कोई भी इसका अनुमान लगा सकता था। फिर भी उन्होंने, खाने के बाद बच्चों से मिलने के लिये समय निकाला, और जैसे ही उनके सोने का समय होने वाला था, उन्होंने अपने दफ्तर में जाने का निर्णय लिया और फिर से आधे घन्टे तक ई-मेल देखने का काम किया। वो हम सबके लिये एक आदर्श मिसाल बनकर रहते हैं जिसे हम देख सकें और अपना सकें। हम सभी को अपने आप से यह प्रश्न पूछना चाहिये, कि क्या हम "उनके पदचिन्हों पर चल रहें हैं?"

बाबूजी का प्यार भरा संदेश

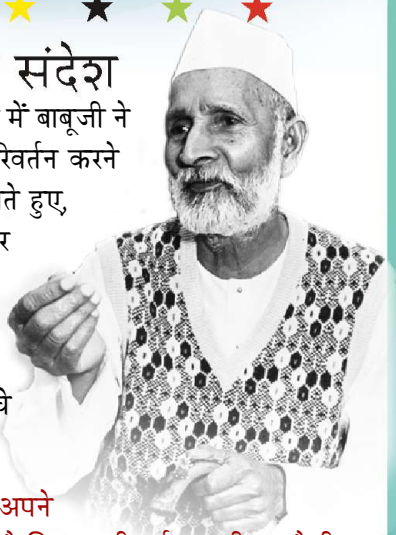

२२ दिसम्बर २०११ को भेजे सन्देश में बाबूजी ने गुरुदेव से उनकी जीवनशैली में परिवर्तन करने की विनंती की है। इसे ध्यान में रखते हुए, गुरुदेव ने उत्तरी भारत का दौरा रद्द कर दिया है तथा वे, उन सबके लिये जो उनसे मिलना चाहते हैं, मणपाक्कम आश्रम में उपलब्ध रहेंगे। बाबूजी के सन्देश से लिया गया उद्धरण नीचे प्रस्तुत है।

"इतने सारे वर्षों के दौरान, तुमने अपने स्वयं को इतना ज़्यादा समर्पित किया है कि तुम्हारी वर्तमान जीवन शैली एक बहुत थके हुए शरीर की वास्तविकता के लिए उपयुक्त नहीं है, इसमें बद्लाव की आवश्यकता है। तुम्हारे शरीर को हर-सम्भव देखभाल : आराम, शान्ति तथा तुम्हारे दैवीय व्यक्तित्व को विशेष देखभाल की आवश्यकता है।

... तुम अपने स्वयं का अधिकतम दे चुके हो, अब और तुम क्या चाहते हो? इस समय यात्राओं की और ज़्यादा आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये इस तरह का ख़तरा हम सहन नहीं कर सकते हैं। यह आज का निर्देश है; यह हमारे प्रेम की उच्चतम अभिव्यक्ति है, क्योंकि तुम्हारा स्वास्थ्य हमारे लिये सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है।"

(Please refer to the original version in the English newsletter.)

गुरुदेव के दौरे का विवरण

मुम्बई

गुरुदेव २२ अक्टूबर की शाम को दुबई से मुम्बई आकर सीधे पनवेल आश्रम पहुँचे। वहाँ उत्सव जैसा वातावरण था और जब गुरुदेव ने आश्रम के द्वार से प्रवेश किया तो उनका स्वागत भावपूर्ण गीत गाकर किया गया। पारम्परिक स्वागत के बाद उन्होंने भूतल पर नवनिर्मित पुस्तक विक्री केन्द्र

और पुस्तकालय तथा दूसरी मंजिल पर निर्मित नये कॉटेज का उद्घाटन किया। गुरुदेव ने उस जगह पर चारों ओर विचरण के बाद संतोष व्यक्त किया। यद्दपि वे वहाँ केवल एक रात ठहरने और रविवार सुबह का सत्संग कराने के लिये आये थे, लेकिन अर्धरात्रि में उन्होंने आश्रम में एक और दिन रुकने और तीन सत्संग कराने का निश्चय किया।

रविवार २३ अक्टूबर को गुरुदेव ने सुबह का सत्संग ९ बजे कराया। उसके बाद उन्होंने अपने उत्तराधिकारी भाई कमलेश पटेल का परिचय दिया। परिचय देते समय उन्होंने बाबूजी के कथन को दोहराया, "मेरे बाद भी एक होगा" और इस बात पर विशेष बल देते हुये कहा कि छात्रों को गुरु के चुनाव का अधिकार नहीं है, बल्कि उन्हें अपने गुरु से अधिकतम सीखते हुये उस अवसर का उपयोग करना चाहिये।

भाई कमलेश पटेल ने समूह को सम्बोधित करते हुये कहा, "क्या हम अभ्यासियों के रुप में उस स्थिति को महसूस करने के लिये तैयार हैं जो गुरुदेव हमें सिटिंग के दौरान देते हैं। महसूस करने के बाद क्या हम इसे ग्रहण करते हैं, ग्रहण करने के बाद क्या हम इसे कायम रखते हैं और अपने साथ इस हालत या स्थिति को ले जाते हैं।"

भाई कमलेश पटेल के भाषण के बाद मुम्बई के अभ्यासियों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। शाम का सत्संग ५ बजे था, जिसके बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। एक अनऔपचारिक वार्तालाप में गुरुदेव ने अभ्यासियों को "माया" के जाल में ना फँसने का सुझाव दिया। जब एक अभ्यासी ने उनसे पूछा कि इस जाल में से व्यक्ति कैसे बाहर निकल सकता है, तब उन्होंने कहा कि केवल प्रार्थना ही इस स्थिति से मुक्त होने में सहायता कर सकती है।

२४ अक्टूबर को सुबह ७ बजकर ३० मिनट पर गुरुदेव ने सत्संग कराया और अभ्यासियों की आन्तरिक स्थिति और अनुशासन की प्रशंसा की। उसके बाद वे मुम्बई चले गये। वहाँ पर वे एक भाई के घर पर ठहरे और शाम का सत्संग कराया। २५ अक्टूबर की सुबह गुरुदेव ने अहमदाबाद के लिये प्रस्थान किया।

अहमदाबाद

दीवाली और गुजरात के नववर्ष के अवसर पर गुरुदेव का भारत के पश्चिम भाग का दौरा गुजरात के सभी अभ्यासियों के लिये एक विशेष उपहार था। वे दोपहर में वहाँ पहुँचे और लगभग ५०० अभ्यासियों ने ज़ोनल आश्रम में उनका स्वागत किया। कुछ देर विश्राम करने के पश्चात उन्होंने लगभग ३००० अभ्यासियों के लिये शाम का सत्संग कराया। तत्पश्चात एक छोटे से भाषण में उन्होंने कहा कि उनके दौरे का प्रमुख उद्देश्य उनके भविष्य के उत्तराधिकारी भाई कमलेश पटेल का परिचय कराना है।

अगले दिन दीवाली थी और भाई कमलेश पटेल ने सत्संग कराया। सत्संग के बाद भाई गुरप्रीत ने कुछ सुन्दर भजन गाये जिन्होंने सबको एक अत्यधिक आनन्दमय स्थिति में पहुँचा दिया। शाम के समय सारा आश्रम लगभग एक हजार दीपकों और सब जगह रोशनी से जगमगा उठा। शाम के सत्संग के बाद बड़ौदा और अहमदाबाद केन्द्रों की अभ्यासी बहनों ने परमपरागत गरबा नृत्य प्रस्तुत किया। दिव्य प्रेम की एक तीव्र लहर वातावरण में फैल गयी जिसे वहाँ सभी ने महसूस किया।

२७ अक्टूबर को गुजरात का नववर्ष था और राज्य की परम्परा के अनुसार तीन छोटे बच्चें नमक लेकर गुरुदेव के पास उनको 'सबरस' की शुभकामनायें देने के लिये गये। अपनी गोल्फ-कार्ट में ध्यान-कक्ष की ओर जाते हुये वे लगभग सौ बच्चों से मिले, जो उनका अभिवादन करने के लिये एक पंक्ति में खड़े थे। उसके बाद उन्होंने सत्संग कराया और अहमदाबाद के एक जोड़े का विवाह सम्पन्न कराया।

गुरुदेव के साथ अनऔपचारिक वार्तालाप में से चुने हुये कुछ अनमोल वचन:

- ❖जब किसी अभ्यासी ने गुरुदेव को अपना परिचय दिया, तब उन्होंने कहा कि हमें अपने प्रियजनों को अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं है।
- ❖परिणाम के बारे में प्रश्न पूछने पर गुरुदेव ने उत्तर दिया कि अभ्यासियों की संख्या में वृद्धि को परिणाम के रुप में देखना गलत है, हमें बस पूर्णतया दिल लगाकर कार्य करना चाहिये।
- ❖किसी ने पूछा कि क्या जीवन में आराम के साधनों का उपयोग करना उचित है। उन्होंने कहा कि यदि कोई सुख-सुविधाओं के बिना जी ही नहीं सकता तो यह गलत है, यदि हम यह सोचते हैं कि आध्यात्मिकता में हमें साधन उपलब्ध होते हुए भी उनका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए तो यह भी एक कठोर एवं गलत धारणा है। उन्होंने समझाया कि हमें साधनों से लगाव नहीं होना चाहिये तथा सभी परिस्थितियों में खुश रहना चाहिये।

अहमदाबाद

आनन्द

वड़ोदरा

सायं के सत्संग के उपरान्त अहमदाबाद केन्द्र के द्वारा दो सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। पहले सन्त नरसिंह मेहता के जीवन पर आधारित नाटक हुआ और उसके बाद मशाल नृत्य प्रस्तुत किया गया। गुरुदेव ने ये सभी कार्यक्रम सी.सी. टी वी के द्वारा कॉटेज में रहकर देखे तथा उनकी प्रशंसा की। गुरुदेव बहुत प्रसन्न थे तथा कार्यक्रम के प्रतिभागियों के साथ कुछ समय बिताने के बाद वे आराम करने चले गये।

२८ तारीख की प्रातः लगभग ६:३० बजे १००० से भी अधिक अभ्यासियों के साथ गुरुदेव ने आनन्द (अहमदाबाद से ७५ कि.मी.) के लिये प्रस्थान किया। उन्होंने आनन्द में सत्संग कराया तथा एक भाई के घर पर दिन बिताया। गुजरात के सभी प्रशिक्षकों तथा राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के चुनिंदा कार्यकर्ताओं के लिये जागतिक सेवा संघ GST कार्यशाला का आयोजन किया गया।

२९ तारीख को आनन्द में सत्संग के बाद गुरुदेव ने वड़ोदरा आश्रम के लिये प्रस्थान किया। गुरुदेव के साथ रहने के लिये लगभग २५०० अभ्यासी चार राज्यों से आकर एकत्रित हुए थे। २९ तारीख को गुरुदेव ने सायं तथा ३० तारीख को प्रातः एवं सायं का सत्संग कराया। वड़ोदरा केन्द्र के बच्चों तथा अभ्यासी बहनों ने दो नृत्य प्रस्तुत किये। १ नवम्बर २०११ को प्रातः ७.३० बजे गुरुदेव ने अपनी कॉटेज में सत्संग कराया। उसके बाद वे अहमदाबाद चले गये। २ नवम्बर को दोपहर ३ बजकर २० मिनट पर गुरुदेव ने चेन्नई के लिये प्रस्थान किया।

चेन्नई

एक लम्बी यात्रा के बाद गुरुदेव चेन्नई लौट आये। सड़कों पर भारी यातायात के कारण वे आश्रम काफ़ी देर से पहुँचे तथा थके हुए भी लग रहे थे, फिर भी अगले दिन प्रातः वे ६:०० बजे तक तैयार हो गये थे। उन्होनें बताया कि वह ५ बजे उठ गये थे और थकान के कारण उन्होंने सोचा कि ७ बजे तक सोता रहूँ। लेकिन तभी उन्होंने महसूस किया कि यह थकावट नहीं बल्कि आलस्य है और इसलिये वे उठ गये। हम सभी के लिये यह एक उदाहरण एवं सन्देश है कि इस उम्र में भी और इतनी लम्बी यात्रा करने के पश्चात भी गुरुदेव अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग अपने को उत्साहित तथा आत्म–निर्भर बनाने के लिये करते हैं।

गुरुदेव इस यात्रा के अन्तर्गत प्राप्त पुस्तकों में से आश्रम, पुस्तकालय, अपने कक्ष, ओमेगा स्कूल तथा सतखोल आश्रम के लिये पुस्तकें छाँट रहे थे। स्वयंसेवक पुस्तकों के शीर्षकों को पढ़ कर गुरुदेव की सहायता कर रहे थे। यह देखने योग्य था कि गुरुदेव कितनी सतर्कता के साथ आवश्यकता एवं प्रासंगिकता के आधार पर पुस्तकों का वर्गीकरण कर रहे थे।

५ नवम्बर को चेन्नई में काफ़ी बारिश होने लगी थी तथा बाढ़ का खतरा पैदा हो गया था क्योंकि सिंह द्वार से होकर कॉटेज के आसपास पानी आने लगा था।

अभ्यासी स्वयंसेवकों ने पानी के प्रवेश को रोकने के लिये रेत से भरे बोरे लगा दिये। गुरुदेव चिंतित थे तथा सावधानी के तौर पर उन्होंने स्वयंसेवकों को निर्देश दिया कि किताबों की अलमारी के नीचे वाले खाने को खाली करके पुस्तकों को गत्ते के डिब्बों में बन्द करके ऊपर वाले खाने में रख दिया जाए।

७ नवम्बर की शाम को गुरुदेव ने मॉरीशस के अभ्यासियों से मुलाकात की। गुरुदेव ने उन्हें एक सिटिंग दी तथा उनके साथ कुछ समय व्यतीत किया। उन्होनें कहा कि 'किसी को कभी भी यह नहीं मान लेना चाहिये कि वह प्राप्त कर चुका है'। हर एक चीज़ अगली प्रक्रिया की शुरुवात होती है तथा इस प्रक्रिया का कोई वास्तविक अंत नहीं होता है।

११ नवम्बर एक विशेष दिन था क्योंकि गुरुदेव ने प्रातः ९ बजे का सतसंग कराया और उसके बाद १३ शादियाँ कराई। ध्यान कक्ष पूरी तरह से भरा हुआ था और सभी अभ्यासियों के लिये अपने प्रियतम के दर्शन का अनूठा अवसर था। चारों ओर वातावरण में व्याप्त खुशी स्वयं में महसूस की जा सकती थी। गुरुदेव बहुत खुश एवं प्रसन्न थे।

उन्होंने शाहजहाँपुर से आए २५-३० अभ्यासियों से मुलाकात की जो गुरुदेव के साथ समय बिताने आये थे। गुरुदेव ने मुलाकात की शुरुआत एक सिटिंग से की। गुरुदेव ने एक निपुण मेज़बान की तरह सभी के लिये जलपान सुनिश्चित किया। जब अभ्यासी बार-बार गुरुदेव से शाहजहाँपुर आने की प्रार्थना कर रहे थे तब उन्होंने कहा "मैं अवश्य आऊँगा"। गुरुदेव ने तुरंत शाहजहाँपुर सहित उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में जाने की योजना बनाई। लेकिन एक सप्ताह में वे तीन बार बीमार पड़ गए। परिणाम स्वरूप उन्हें सभी यात्राओं के कार्यक्रम रद्द करने पड़े और वे मणपाक्कम में ही ठहरे रहे।

एक सुबह जब गुरुदेव अभ्यासियों को सिटिंग देने वाले थे, तभी उन्होंने कहा, "लालच से बचने का सबसे अच्छा उपाय है लालच के स्थान से दूर रहना। मान लीजिए आप जलेबी से प्रलोभित हैं और आप जलेबी की दुकान पर ही हैं तो अवश्य ही आपका मन जलेबी खाने के लिये करेगा। इसीलिए अच्छा है कि उस स्थान से दूर रहें जहाँ होने से लालच उत्पन्न होता है"।

२७ नवम्बर को भारी बारिश होने के बावजूद भी गुरुदेव सतसंग के लिये तैयार थे। बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी तथा इसके बारे में गुरुदेव बहुत चिंतित थे। उन्होंने कहा,"जब हम आश्रम बना रहे थे, यदि मेरे पास कुछ और धन होता, तो हम इस पूरे आश्रम को कुछ और फीट ऊँचा बनवा सकते थे"। जिस समय गुरुदेव यह समझा रहे थे, उनकी सादगी एवं सच्चाई को अनुभव किया जा सकता था।

एक अभ्यासी दम्पत्ति ने, जो अभी अमरीका से वापिस आये थे, गुरुदेव से मुलाकात की। गुरुदेव ने लड़की से पूछा "क्या तुम वापिस आने के निर्णय से खुश हो?" लड़की ने उत्तर दिया "गुरुदेव, मैं बहुत खुश हूँ"। गुरुदेव ने कहा, "वहाँ तुम्हें पैसा मिलता है और यहाँ खुशी। पैसा और खुशी दोनों साथ-साथ नहीं चलते"।

२९ नवम्बर से २ दिसम्बर तक गुरुदेव "गायत्री" में थे। वे शुक्रवार शाम को समुद्र तट पर गए लेकिन साँस लेने में परेशानी होने के कारण उन्हें घर आकर आराम करना पड़ा।

३ दिसम्बर २०११: सुबह ९:१५ बजे गुरुदेव आश्रम पहुँचे। उन्होंने "महाभारत कथा" का एक डीवीडी सैट प्राप्त किया, जो इस महान महाकाव्य का द्वितीय भाग है। इसके कई अंश मौलिक महाभारत सीरीज़ से लिए गये हैं। गुरुदेव ने इसे देखने में विशेष रुचि दिखाई।

दिसम्बर का प्रथम सप्ताह गुरुदेव के साथ गुजारने के लिये लगभग ३०० अभ्यासी गुजरात से आश्रम आए। एक शाम सत्संग के बाद, इटली के लगभग २० अभ्यासी एक साथ आए और हॉल में गुरुदेव से मिलने की प्रतिक्षा करने लगे। वे बड़े धैर्य से प्रतिक्षा कर रहे थे और वहाँ बहुत सुन्दर वातावरण बना हुआ था। गुरुदेव की अपने कार्यालय में कुछ कार्य करने की योजना थी लेकिन जैसे ही वे शयन कक्ष से बाहर आए उन्होंने अपना इरादा बदल दिया और हॉल में बैठ कर इटली से आए हुए अभ्यासियों से बातचीत करने लगे। उन्होंने कुछ देर भाषण भी दिया तथा उपस्थित अभ्यासियों की खुशी के लिये एक सिटिंग भी दी।

१० और ११ नवम्बर को सम्पन्न सप्ताहांत कार्यशाला "हृदय वाणी" से एक प्रश्न उठा, जिसे गुरुदेव के समक्ष प्रस्तुत किया गया। "जब हम कहते हैं, हृदय से बोलो, क्या इसका अर्थ यह होता है कि तैयारी मत करो, बल्कि स्वाभाविक रूप से बोलो"। गुरुदेव ने बताया कि किसी भी वार्ता के लिये तैयारी करना अत्यंत आवश्यक है। वार्ता से एक दो दिन पहले हमें विषय को अच्छी तरह अपने मस्तिष्क में प्रस्थापित होने देना चाहिए। वार्ता के प्रमुख पहलुओं को पश्चिम के देशों की तरह नहीं लिखना चाहिए। इससे विषय की जटिलता बढ़ जाती है और सहजता समाप्त हो जाती है। बल्कि विषय को अन्दर (हृदय में) रखकर, आंतरिक तैयारी होने देनी चाहिए। जब वार्ता का समय आता है तो हम दिल से बोलने के लिये तैयार हो जाते हैं। गुरुदेव ने कहा कि केवल हृदय से बोलना पर्याप्त नहीं है। हमें वार्ता में अपनी जान डालनी चाहिए।

१५ दिसम्बर को गुरुदेव, ओंगोल केन्द्र के अभ्यासियों को मात्र सत्संग कराने के लिये, गायत्री से आश्रम आये।

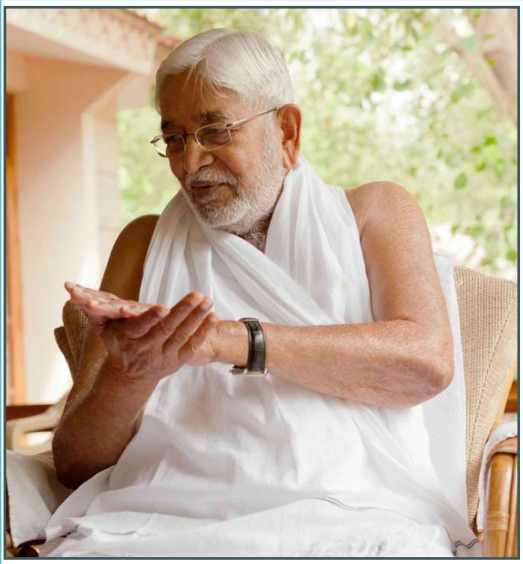

१९ दिसम्बर २०११

दक्षिण अफ्रीका और ओशीनिया से संगोष्ठी के लिये आये अभ्यासी आश्रम पहुंच चुके थे और उनमें से कई अभ्यासियों से मालिक सुबह ८ बजे से ११.३० बजे तक मिले। थके हुए होने के बाद भी मालिक सभी से मिलना चाहते थे। उन्होंने दिल्लगी करते हुए कहा "अभी तक आये ३५० लोगों में से मैं लगभग ३०० लोगों से मिल चुका हूँ"। शाम को फिर से लगभग ५० अभ्यासी आये और हॉल में इंतज़ार करने लगे। मालिक ऑफिस से बाहर आये और जब उन्होने इंतज़ार करने वालों को देखा, तो उन्होंने कहा "कृपया थोडी देर इंतज़ार कीजिये, मैं कुछ ही समय में लौट कर आता हूँ"। मालिक फिर से बाद में आये और सभी को सत्संग करवाया। हॉल में एक घन्टे से इंतज़ार करने वालों के लिये ये एक महान अनुभव था।

२४ दिसम्बर २०११

मालिक आश्रम में आये और बाहर धूप में बैठे। वे बाबूजी महाराज की ओर से उन्हें आये नवीनतम सन्देश के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने बताया कि किस प्रकार उन्होंने पूरी आगामी यात्रा की योजना बनायी और टिकिट लेने का फैसला लिया तब उन्हें यह सन्देश मिला। अपने मालिक के निर्देशों का पालन करते हुए उन्हें अपनी यात्रा की योजना रद्द करना पड़ीं।

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर, अभ्यासियों का एक समूह मालिक की कुटिया में बैठा और उन्होंने मालिक के लिये क्रिसमस के गीत गाये। जब उन्होंने गाना शुरू किया,उसे सुन मालिक अपने शयन कक्ष से बाहर खिंचे चले आये और हॉल में आकर धुन गुनगुनाने लगे जिससे सभी प्रसन्न हो गये। मालिक ने कहा, "पिछली बार यह गीत मैंने क्रैस्ट में सुना था", और वे बैठ गये और वहाँ उपस्थित सभी के साथ कुछ समय व्यतीत किया। उन्होंने सभी गाने वालों में टॉफ़ी (मिठाई) बाँटीं।

क्रिसमस पर जब मालिक ध्यान कक्ष की ओर जा रहे थे, तब बच्चे लाल और सफ़ेद कपडे पहन कर कतार बनाकर रास्ते के दोनों ओर खड़े हो गये। गोल्फ़ कार में बैठ कर धीरे धीरे जाते हुए उन्हें मिलकर मालिक बहुत प्रसन्न हुए।

२६ दिसम्बर २०११

यात्रा पर प्रतिबन्ध के कारण, मालिक ने निश्चय किया है कि जब भी उनके पास समय होगा सुबह ९ बजे का सत्संग वे करवाएंगे। उन्होंने कहा कि वे बाहर आने और ध्यान कक्ष में प्रत्येक से मिलने का पूरा प्रयास करेंगे और यह भी सलाह दी कि कुटिया पर भीड़ करने की बजाय प्रत्येक को उनसे वहाँ मिलने का प्रयास करना चाहिये।

एक दिन सुबह के सत्संग के बाद मालिक बाहर धूप में बैठे और बहुत देर तक बात करते रहे। उन्होंने कहा, "५० साल की उम्र के बाद इच्छा शक्ति असफल क्यों हो जाती है? क्योंकि जब हमें इच्छा शक्ति का उपयोग स्वयं के विकास के लिये करना चाहिये, हम यह नहीं करते। इसके बजाय हम इच्छा शक्ति का उपयोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये करते हैं, जिससे शक्ति कमजोर हो जाती है"। उन्होंने एक बच्चे का उदाहरण दिया और कहा, "तुम्हें अपने बच्चे को खिलोने की दुकान पर ले जा कर यह नहीं कहना चाहिये कि अपनी इच्छाओं को नियंन्त्रित करो"। उन्होंने अपने खुद के उदाहरण के बारे में बात करते हुए बताया कि लगभग एक वर्ष या ऐसे ही कुछ समय पहले वे सुबह नींद से जल्दी उठ नहीं पा रहे थे और देर तक सोते थे। लेकिन फिर उन्होंने इस पर विजय पाने का निश्चय किया और आजकल वे सुबह ४:३० और ५ बजे के बीच उठ जाते हैं। उन्होंने कहा, "मेरी उम्र के मनुष्य में, जहाँ हर चीज़ ढह जाती है, मैं अपनी इच्छाशक्ति को जीवित रखे हूँ। मैं नियमित रूप से एक दो व्यक्तिगत सिटिंग, एक दो प्रशिक्षक बनाने के लिये सिटिंग और एक सत्संग कराता हूँ, और फिर मैं अपने ई–मेल देखता हूँ, जो थोड़े नहीं होते बल्कि लगभग ४० ई–मेल नियमित रुप से होते हैं"।

पूर्वी तट पर आए एक चक्रवात के कारण भारी बरसात और तेज हवाऐं चेन्नई शहर में भी आईं। आश्रम परिसर पानी से पूरी तरह से तर हो चुका था और बाढ़ आने की संभावना से चिंता थी। कई अभ्यासियों ने मणपाक्कम आना शुरू कर दिया था और इस लिये एक परिपत्र जिसमें अभ्यासियों को मणपाक्कम आने से मना किया गया, जारी करना पड़ा। सौभाग्य से चक्रवात गुज़र गया और सब कुछ जल्दी ही सामान्य हो गया।

मॉरीशस के अभ्यासियों हेतु सेमिनार
७ से १४ नवम्बर २०११

६ नवम्बर को मणपाक्कम आश्रम में २७ अभ्यासी एवं ८ बच्चों के समूह का आगमन हुआ। ७ नवम्बर को गुरुदेव ने अपने कॉटेज में अभ्यासियों से भेंट की, एवं सांय: ४:४५ को सिटिंग के पश्चात चाय व नाश्ता रखा गया।

इस सेमिनार के दौरान सभी अभ्यासियों ने दो-दो व्यक्तिगत सिटिंग ली। ८ से १३ तारीख के दौरान व्यक्तिगत अभिव्यक्ति एवं सामूहिक परिचर्चा पर आधारित सेमिनार आयोजित हुआ। यह सत्र अत्यंत फलदायी साबित हुआ। इसमें बहन डॉली एवं उनके प्रशिक्षक दल ने सहज मार्ग साधना पर प्रस्तुतियाँ दी। सामूहिक परिचर्चा के दौरान हर एक अभ्यासी को चर्चा के विषय पर अपनी समझ अभिव्यक्त करने का मौका मिला। वहाँ उपस्थित विभिन्न समूहों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। दोपहर में गुरुदेव की वीडियो वार्ता प्रदर्शित की गई।

भाई वी. कणन्न, ए.पी. दुरई एवं कमलेश पटेल की वार्ताओं से सहज मार्ग की समझ में बढ़ोतरी हुई तथा अभ्यासियों को अपने क्रमिक विकास एवं मॉरीशस में सहज मार्ग के प्रसार हेतु कार्यांवित होने का प्रोत्साहन मिला। भाई शरत ने "कम्युनिटी बिल्डिंग (सामाजिक संघटन)" पर एक प्रस्तुति दी तथा मॉरीशस में इसकी प्रारंभिक कार्य रचना पर चर्चा की एवं सहमति व्यक्त की।

भाई कमलेश पटेल ने अपनी वार्ता में कहा कि कई अभ्यासी यह पूछते हैं कि घर वापसी पर अच्छी "दशा" कैसे कायम रखी जाए? उन्होंने बताया कि हमें इस "दशा" को स्वीकार कर आगे बढ़ने की जगह देनी चाहिए। गुरुदेव ने हमारे हृदयों में एक आध्यात्मिक पूंजी का निवेश किया है और हमें इसे आगे बढ़ने देना चाहिए। यह "दशा" आगे बढ़ती जानी चाहिए तथा इसका स्वरूप हमारे विचारों में, शब्दों में और हमारे कार्यों में झलकना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि मिशन में नये अभ्यासी को लाना, तत्पश्चात उनसे संपर्क बनाये रखना, यह हर एक अभ्यासी की जिम्मेदारी है।

१४ नवम्बर को अभ्यासियों ने गुरुदेव से थोडी देर भेंट की, फिर गुरुदेव ने उन्हें यात्रा के लिये शुभ कामनायें दी। गुरुदेव ने कहा कि वे अपनी उम्र की वजह से मॉरीशस नहीं आ सकते परन्तु उन्होंने यह अनुग्रह किया कि- "आप मुझे अपने साथ ले चलो। मुझे उम्मीद है कि आप मेरे कहने का आशय समझ गये होंगे।" यह हमें सिर्फ पुनर्स्मरण कराता है कि हर समय हमें उनके साथ होना है।

ओशीनिया एवं दक्षिण-अफ्रीकी देशों के लिए हुई विचार गोष्ठी
१६ से २२ दिसंबर २०११ तक

"मैं हमेशा से उनका रहा हूँ, परंतु क्या वह मेरे रहे हैं?"

विचार गोष्ठी में भाग लेने आए किसी भी प्रतिभागी को आगमन के दो दिवस पश्चात तक भी गुरुदेव के दर्शन नहीं हुए थे और सभी को मौन सन्देश था कि "उन्हें अपने अंदर खोजें तथा उनकी उपस्थिति का अनुभव करें।" विचार गोष्ठी का विषय इसके वास्तविक अर्थ को स्वयं ही दर्शाता है कि उन्हें अपने अदंर खोजें और पूछें "क्या हमने उन्हें पूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया है?"

रविवार दिनाँक १८ दिसंबर को पूज्य गुरुदेव ने सत्संग कराया और विभिन्न प्रेरणास्पद वार्ताकारों द्वारा दिये गये व्याख्यानों से गतिविधियाँ प्रारम्भ हुई। भाई संतोष ने 'हृदय की आवाज़' पर विचार व्यक्त किये। वार्ता में यह भी कहा गया कि पूज्य गुरुदेव हमें भविष्य के बारे में योजना बनाने वाला तथा उन जैसा आलौकिक योजनाकार जैसी उनकी दूर-दृष्टी है वैसी सोच वाला बनते देखना चाहते हैं न कि हमारी अपनी अलग कल्पना शक्ति का उपयोग करने वाला। अगले दिन भाई कृष्णा ने 'भाई-चारा' पर अपना वक्तव्य देते हुए कहा यह हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है कि जिस आवृत्ति पर हमारे पूज्य गुरुदेव हैं उसी आवृत्ति पर हम भी प्रतिध्वनित हों। २० दिसंबर को भाई कमलेश ने अभ्यास की नियमितता पर जोर दिया।

२१ दिसंबर को पूज्य गुरुदेव ने ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड के अभ्यासियों की वार्षिक मीटिंग (ए.जी.एम.) में भाग लिया। उन्होंने कहा कि हमें राष्ट्रीयता की सीमाओं को तोड़ना है और एक बनना है। पूज्य गुरुदेव ने काल्पनिकता एवं वास्तविकता के बारे में उल्लेख करते हुए कहा कि वह हमेशा से चाहते रहे हैं कि वे ऑस्ट्रेलिया के समुद्रीय तट पर कार से सैर करें, परंतु वास्तविकता यह है कि अब वे अधिक उम्र के कारण लम्बी यात्रा नहीं कर सकते। अत: हमें जानने की आवश्यकता है कि हमारे अपने जीवन में काल्पनिकता क्या है और वास्तविकता क्या है। पूज्य गुरुदेव ने प्रतिभागियों के साथ रात्रि भोजन ग्रहण किया तथा खास उनके लिए बर्गर एवं चिप्स की व्यवस्था करवायी।

दिनाँक १७ से २० दिसंबर २०११ के बीच ओशिनिया एवं दक्षिण-अफ्रीकी युवा विचार गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें लगभग ८० युवाओं ने भाग लिया। इसकी परिचर्चा का विषय था 'उनके पदचिन्हों पर चलना'। इस गोष्ठी में भाग लेने वाले प्रतिभागी न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण-अफ्रीका और कुछ भारत-वर्ष से भी थे।

चार दिवसीय गोष्ठी में वार्तायें, सक्रिय गतिविधियाँ और सत्संग सम्मिलित थे। सत्र के अंतिम दिन प्रत्येक समूह ने या तो नाटिका, गीत अथवा कोई क्रिया-कलाप का प्रर्दशन किया। हृदय से हृदय की चर्चा ने प्रत्येक को एक दूसरे से खुलने में सहयोग दिया। 'हम एक हैं' की भावना जागृत होती दिखाई पड़ी। इस गोष्ठी में सम्मिलित युवा इस बात से काफी प्रसन्नचित्त थे कि यहाँ उन्हें एक-दूसरे से अपने विचार एवं धारणायें आपस में बाँटने का अवसर प्राप्त हुआ। अब आगे का केन्द्र बिंदु यही होगा कि हमें वैसा बनना है जैसा की 'वे' चाहते हैं और सब मिलकर रहेंगे तथा प्रेम के साथ मिलकर कार्य करेंगे।

अभ्यासियों द्वारा विचार–मंथन, रांची, झारखंड

२८ अक्टूबर को रांची केंद्र के अभ्यासियों के लिये संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। रांची में अभ्यासियों की संख्या और गुणवत्ता में सुधार लाने के प्रति उपायों की चर्चा करने के लिए अभ्यासियों को तीन समूहों में विभाजित किया गया। समूहों ने अनेक कार्य–बिंदु पेश किए। यह तय किया गया कि अभ्यासियों को नियमित रूप से व्यक्तिगत सिटिंग लेने, भंडारों में नियमित रूप से भाग लेने और रविवार के सतसंग में बिना चूक किये उपस्थित रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह भी तय हुआ कि पूर्ण दिवसीय कार्यक्रमों और गृह–सभाओं को पहले से सोची गई उचित योजना और प्रचालन–तंत्र के साथ संचालित करना चाहिए। सत्र का समापन भाई राकेश और बहन कंचन द्वारा "प्रेमपूर्ण सेवा" पर दी गई लघु वार्ताओं के साथ हुआ।

गृह–सभाएँ

दुर्गापुर, पश्चिम बंगाल

१३ नवंबर २०११ को बहन अनिता जैन और भाई अरुण लाठिया भाई एन.पी.चक्रबर्ती के निवास स्थल पर "सहज मार्ग अभ्यास और प्रणाली" पर एक संवादात्मक सत्र के लिए भाई परिमल तथा दुर्गापुर में बसे अन्य अभ्यासियों के साथ शामिल हुए। सहज मार्ग साधना, साथ ही अभ्यासियों की गुणवत्ता में सुधार लाने के से संबन्धित विभिन्न विषयों पर की गई चर्चाओं में अनेक प्रश्न सामने आए। इन सभी प्रश्नों का प्रभावकारी ढंग से स्पष्टीकरण किया गया और कुल मिलाकर यह एक अत्यंत सन्तोषजनक कार्यक्रम रहा। यह सबकुछ गुरुदेव की दिव्य कृपा और उत्सुक अभ्यासियों की भागीदारी के कारण संभव हुआ।

नासिक– महाराष्ट्र

८ दिसंबर' २०११ को भाई सुनील चन्द्रन के निवास–स्थान पर हुई सभा में सेना के अफ़सर, उनकी धर्म–पत्नियां और विद्यालय के शिक्षकों सहित कुल १२ लोगों ने भाग लिया। बहन अनुसूया रामचन्द्रन, नासिक की केन्द्र–प्रभारी, द्वारा सहज मार्ग के महत्त्व और कैसे यह मानव को संतुलित जीवन के साथ–साथ आध्यात्मिक विकास की प्राप्ति में सहायक है, इसके बारे में किस्सों और उदाहरणों सहित विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया। प्रतिभागियों ने आध्यात्मिकता के लगभग सभी पक्षों (पहलुओं) में गहरी दिलचस्पी दिखाई और व्यक्तिगत अनुभवों एवं शंकाओं को लेकर कई प्रश्न पूछे। अनेक प्रतिभागियों ने स्थानीय प्रशिक्षकों के संपर्क के बारे में जानकारी के लिए अनुरोध किया और वह उन्हें उपलब्ध कराई गई।

समन्वित कार्यशालायें (Facilitated Workshops)

मुंबई, महाराष्ट्र

"अंदाज़ (तरीका) विषय से ज्यादा महत्त्व रखता है"।

अक्टूबर २०११ में, अभ्यासियों के लिए प्रशिक्षण–कार्यक्रमों का संचालन करने के उद्देश्य से सरलीकरण का, एक प्रभावशाली पद्धति के रूप में उपयोग करते हुए,भारत और विदेशों से आए हुए ६५ सहायकों के लिए एक गहन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। यह तरीका छोटे–छोटे समूहों में काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे आत्म–विश्वास पैदा होता है। आपसी भरोसे और आदर का वातावरण बनाया जाता है जिससे हरेक प्रतिभागी के अंदरूनी विकास में मदद होती है। आपसी वार्तालाप की गुणवत्ता (माईक पर दिए गए भाषणों की तुलना में) सूक्ष्म रहती है जो आश्रम के वातावरण के अनुरूप है।

इस तरीके को अपनाते हुए मुंबई और पुणे के सहायक दल ने "संवाद और बन्धुत्व" विषय पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया, एक आम अभ्यासियों के लिए (२० नवंबर, ६५ प्रतिभागी) और दूसरा प्रशिक्षकों के लिए (४ दिसंबर, ३६ प्रतिभागी)। अधिकतर आपसी वार्तालाप विचारों के भ्रातृ–सुलभ आदान–प्रदान के लिए दिए सुझावों को अपनाते हुए ८–१० प्रतिभागियों के छोटे समूहों में हुए। आत्म–निरीक्षण के लिए ली गई सामग्री हमारे गुरुदेवों के लेखन–साहित्य तथा "व्हिस्पर्स फ्रॉम दी ब्राईटर वर्ल्ड" पर विशेश रूप से आधारित थी। प्रतिभागियों की राय अत्यंत सकारात्मक रही। यह सीख संवेदना या अनुभूति तथा बन्धुत्व (नियम–६) पर अधिक आधारित थी और इसमें सोच–विचार पर बहुत कम ज़ोर दिया गया।

विचारों की अभिव्यक्ति का समय

वाशी, मुम्बई

मुम्बई के वाशी क्षेत्र के अभ्यासी हर महीने के दूसरे शनिवार को मिलते हैं। पहला सामूहिक मिलन 'प्रार्थना' विषय पर भाई रामानैय्या के घर पर आयोजित किया गया। 'प्रार्थना' विषय पर सामूहिक चर्चा की गई तथा विषय के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया। हर प्रतिभागी ने विषय को ध्यान से पढ़ा, उस पर मनन् किया तथा एक या दो मिनट तक अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का समापन दस मिनट के गहरे और भावपूर्ण प्रार्थना–ध्यान द्वारा किया गया।

इस तरह के सत्र हर बार अलग–अलग अभ्यासी के घर पर तथा अलग विषय पर आयोजित करने की योजना बनाई गई है। आरम्भ में सहज मार्ग के अभ्यास पर ध्यान दिया जाएगा तथा धीरे–धीरे सहज मार्ग की शिक्षा के गहन तथ्यों को भी विचार विमर्श में सम्मिलित किया जाएगा।

गुलबर्गा, उत्तरी कर्नाटक

७ नवम्बर को भाई महेश देशपांडे के घर पर लगभग बीस अभ्यासियों द्वारा एक सामूहिक मिलन आयोजित किया गया। पहले 'ध्येयपूर्ण तथा व्यवस्थित अभ्यास' नामक गुरुदेव की एक वार्ता का वीडियो दिखाया गया । बाद में सबने सार्वभौमिक प्रार्थना की। इसके बाद चाय के दौरान सभी अभ्यासियों ने अनौपचारिक रूप से बातचीत की। पूरे सत्र के दौरान आनन्दमय तथा भावपूर्ण वातावरण था तथा सभी अभ्यासियों ने गुरुदेव की उपस्थिति का अनुभव किया।

वड़ोदरा, गुजरात

१७ दिसम्बर, २०११ को सुन्दरवन सोसाइटी, वड़ोदरा में कुछ अभ्यासी एकत्रित हुए तथा 'धैर्य चरित्र है' नामक विषय पर चर्चा की और उस पर मनन् किया। शुरूआत में उन्होंने पिछले सत्र के 'व्यवहार' नामक विषय के मुख्य बिन्दु दोहराए तथा कुछ क्षण मौन रहकर गुरुदेव के साथ जुड़ने में बिताए। सत्र के आगे बढ़ने पर अभ्यासियों ने विभिन्न परिस्थितियों में अपने द्वारा की गयी प्रतिक्रिया के बारे में बताया। प्रत्येक अभ्यासी ने महसूस किया कि उन्हें अपने अन्दर रचनात्मक बदलाव लाने की कोशिश करनी चाहिए। उन्हें अपने आन्तरिक तथा बाहरी व्यक्तित्व में संतुलन लाने के लिए एक खुला दृष्टिकोण अपनाना चाहिए तथा अपने हृदय को खोलना चाहिए जिससे वे दूसरों के साथ समानुभूति महसूस कर सकें। इस तरह वे एक रचनात्मक विचारधारा तथा समर्पण की भावना के साथ विभिन्न परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं। संक्षेप में अगर कहें तो 'चरित्र' को विकसित करना चाहिए जैसा की वर्नर अरहर्ड ने कहा है– "हर समय तथा हर परिस्थिति में अपने जीवन की गुणवत्ता को बदलने की शक्ति हमारे पास है"।

सत्र का समापन इस निष्कर्ष के साथ हुआ कि हमें जीवन के हर क्षण में अपने विचारों तथा सुझावों में सूक्ष्मता लाने का प्रयास करना चाहिये, इस तरह हमारे अन्दर एक हल्कापन और शान्ति उत्पन्न होगी।

चेन्नई युवा सभा–नेत्रमपल्ली आश्रम

१५ तथा १६ अक्टूबर को नेत्रमपल्ली आश्रम में १८ से ३० वर्ष के आयु–वर्ग के अभ्यासियों के लिए एक सामूहिक–मिलन आयोजित किया गया। ५५ उत्साहित युवाओं ने 'आध्यात्मिक यात्रा' नामक इस सभा में भाग लिया जो चेन्नई से नेत्रमपल्ली की बस यात्रा से आरम्भ हुई जिसमे पाँच प्रशिक्षक भी सम्मिलित हुए।

नेत्रमपल्ली में गाँव की सुबह की सैर द्वारा कार्यक्रम आरम्भ किया गया। सत्र में 'मिशन–एक आध्यात्मिक प्रवास' नामक एक प्रस्तुति प्रस्तुत की गयी तथा उसके बाद गुरुदेव के उद्देश्यों को पूरा करने में अभ्यासी की भूमिका नामक विषय पर चर्चा की गई। विभिन्न सामूहिक गतिविधियाँ आयोजित की गईं जिनमें सीखने के साथ थोड़ा मनोरंजन भी था। सत्र के दौरान 'गुरुदेव के साथ संबंध' तथा गुरुदेव के प्रति प्रेम कैसे विकसित किया जाए जैसे विषयों पर चर्चा से अभ्यासियों का ध्यान वापस अपने विचारों पर केंद्रित हो गया। एक सामूहिक मनोरंजक खेल तथा सहज मार्ग साहित्य पर एक प्रश्नोत्तरी ने समूह का उत्साह बनाए रखा। कार्यक्रम के अन्त में सभी ने बगीचे में काम किया।

प्रतिभागियों को गुरुदेव का एक चित्र भेंट किया गया। प्रतिभागियों ने आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण का आनन्द उठाया तथा नेत्रमपल्ली आश्रम के पवित्र वातावरण में इस कार्यक्रम के द्वारा स्वयं को तरोताज़ा तथा ऊर्जापूर्ण महसूस किया।

मानवीय एकीकरण पर कार्यशाला

ग्वालियर,मध्य प्रदेश

क्षेत्रीय स्तर पर, करीब ५४ प्रशिक्षार्थियों के लिए, १४ से १६ अक्तूबर को, ग्वालियर केंद्र में मानवीय एकीकरण पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। १४ तारीख को, अभ्यासी इकठ्ठे होने लगे और पंजीकरण एवं व्यक्तिगत सिटिंग का आयोजन किया गया। शाम के सत्संग के बाद, भाई नरेन सिंह ने एकत्रित अभ्यासियों का स्वागत किया।

अगले दिन, होशंगाबाद से, भाई कमल वाधवा, भाई योगेश खंडेलवाल और भाई राम किशोर ने, 'एक दुनिया,एक मानवता' पर एक अधिवेशन का संचालन सार्वभौमिक भाईचारे का प्रचार करने के लिए किया। भाई आर.के.श्रीवास्तव और भोपाल के एक दल ने 'चरित्र निर्माण' के बारे में अधिवेशन का संचालन किया। ये सत्र संवादात्मक थे और इन्होंने भाग लेने वालों को अपने अंदर झाँकने का मौका प्रदान किया। शाम का समय व्यक्तिगत सिटिंग, सत्संग और नौ बजे की प्रार्थना के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए आरक्षित किया गया था।

१६ तारीख को, सुबह के सत्संग के बाद, भाई शिरीष ने किताब–'दिल की आवाज़–२००७' से कुछ पन्ने पढ़े। भाई विकल्प (क्षेत्रीय प्रभारी) ने अभ्यासियों को संबोधित किया और उन्हें उत्साहित किया । प्रशिक्षार्थियों ने आश्रम के निर्माण–कार्य के अनुष्ठान को प्रमाणित रूप से देखा। अंतिम सत्र–'उनके साथ कड़ी विकसित करना' के बारे में था और इसे भाई शिव कुमार और ग्वालियर के एक समूह ने आयोजित किया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन बंधू शिवकुमार, मनु चोप्रा, भगिनी अर्चना व वंदना ने किया।

बच्चों के कार्यक्रम

बरेली, उत्तर प्रदेश

बरेली केंद्र ने, १० से १६ वर्ष के बच्चों के लिए, १४ से १६ दिसंबर के बीच में, एक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ जी.एम. भटनागर ने सत्र को चालू करते हुए कहा कि हमें अपने प्राचीन धर्म ग्रंथों से मूल्यों को वापिस लाना चाहिए। कार्यक्रम शाम को तीन से छह बजे के बीच था और प्रतिदिन मिशन की प्रार्थना से शुरू किया जाता था। "आत्मचेतना और व्यक्तिगत अनुशासन", "हम सब एक हैं", "स्वास्थ और समानता", "सच्चाई और साहस" जैसे विषयों पर भाषण एवं चर्चा हुई। भाई संजीव, भाई प्रवीन, भाई रवींद्र और बहन बिमला, बहन शशि ने और कई स्वयंसेवकों के साथ मिलकर तीन दिनों में कई कार्य कलाप जैसे–रेखाचित्र, चित्रकला, गाना और प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया। रेल्वे सुरक्षा दल (आर.पी.एफ़) की कार्य पद्धति, 'स्वास्थ्य और बीमारीयों की रोकथाम की विधियाँ', और वेन्डिंग मशीन के प्रयोग जैसे विषयों पर संबोधन बच्चों के लिए काफ़ी सूचनात्मक था। कर्नल नितीश ने अच्छे से संपादित कतरन (क्लिपिंग्स) के माध्यम से, देश प्रेम, देश भक्ति, राष्ट्र गान का उगम, शान, शौर्य, नेतृत्व और नीति शास्त्र का प्रदर्शन दिया जो श्रोताओं के दिलों को छू गया। कुल मिलाकर बच्चे प्रेरित और विभोर हुए।

क्रीड़ा दिवस

पुणे, महाराष्ट्र

भाई रामनाथ की पहल से नांदेड़ फाटा आश्रम में एक अद्भुत सप्ताहांत ८ और ९ अक्तूबर को आयोजित किया गया जो अनेक क्रीड़ा के कार्यक्रमों से भरपूर था। पहला दिन युवकों के लिए (१८–३० आयु वर्ग) था और दूसरे दिन बच्चों और ३० के ऊपर के लोगों के लिए था।

पोस्टर, गुरुदेव की अलग अलग खेल खेलते हुई तस्वीरें, उद्धरण और गुब्बारें तैयार थे। शनिवार का दिन खूब सारी शक्ति और उत्तेजना के साथ क्रिकेट के खेल से शुरू हुआ। खेल, सबके मेल मिलाप कि शुरुआत के लिए बेहद असरदार था। इसके पश्चात, नींबू दौड़, किताब संतुलन दौड़, कैरम और शतरंज जैसे खेल खेले गए। जलपान और स्वयंसेवकों द्वारा बनाया हुआ दोपहर का भोजन सबके लिए काफ़ी आनंददायक था।

रविवार के सत्संग के बाद, वही खेल ३० के ऊपर के लोगों के साथ खेला गया। इस कार्यकलाप ने अभ्यासियों में खेल भावना उत्पन्न की और सबको अनुरूपता और भाईचारे से जोड़ दिया।

तिरुपुर, तमिलनाडू

१४ नवंबर को, तिरुपुर के चेट्टिपालयम योगाश्रम में भव्य रूप से बाल दिवस मनाया गया । इस समारोह के लिए निमंत्रण पहले से बाँटे गए थे ताकि आस–पास के ज़्यादा से ज़्यादा बच्चे भाग ले सके।

कार्यक्रम ५ बजे शुरू हुआ और उम्र के हिसाब से खेलों का आयोजन किया गया जिसमें सब ने उत्साह के साथ भाग लिया। सहज मार्ग पर एक विशेष प्रश्नोत्तरी भाई सुंदरेसन द्वारा आयोजित की गई। इस प्रश्नोत्तरी में प्यार, अनुशासन और नैतिकता जैसे विषयों पर प्रश्न रखे गये थे। भाई विश्वनाथ राव (क्षेत्रीय–प्रभारी), भाई सुब्बुरथिनम (आश्रम प्रबंधक), भाई मारप्पन, और बहन सरला ने सारे बच्चों में इनाम बाँटे। रात का खाना सबको परोसा गया और सब बच्चों के माँ–बाप ने मिशन के कार्यकलाप को सराहा। कुछ लोगों ने अभ्यास शुरू करने की इच्छा प्रकट की। ऐसे कार्यक्रम जो कि आध्यात्मिक वातावरण में आयोजित किये जाते हैं, इनका आयोजन करने के महत्व को अहसास करते हुए कई लोगों ने व्यक्त किया कि आगे जाकर भी ऐसे कार्यक्रम किए जाने चाहिए।

पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम

कडपा

मैंगलोर

कडपा, आन्ध्र प्रदेश

४ दिसम्बर २०११ को कडपा केन्द्र, आन्ध्र प्रदेश में पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में लगभग ३१ अभ्यासियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में मिशन की पत्रिका 'कान्सटेन्ट रिमेम्बरेन्स'(सतत् स्मरण) के हाल ही के छपे अंक में "चरित्र निर्माण" एवं "वास्तविक साधना" नामक २ प्रसंगों पर आधारित विषयों को सम्मिलित किया गया । अभ्यासियों का विचार था कि इस कार्यक्रम से वे अभ्यासी काफी लाभान्वित हुए जिन्हें अंग्रेजी का ज्ञान नहीं था क्योंकि कार्यक्रम के दौरान सभी विचार विनिमय क्षेत्रिय भाषा तेलगु में हुए।

कार्यक्रम का समापन बच्चों द्वारा प्रस्तुत एक नाटक से हुआ जिसमें यह दर्शाया गया कि किस तरह सहज मार्ग के महत्व को हर किसी को बताते हुए प्रत्येक भाई–बहन अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

मैंगलोर, दक्षिणी कर्नाटक

४ दिसम्बर २०११ को मैंगलोर केन्द्र में "मेरे गुरुदेव" नामक विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभ्यासियों को दो सप्ताह पहले ही इस विषय पर स्वयं को तैयार करने के लिए कहा गया था। सत्संग के पश्चात गुरुदेव की वार्ता पर आधारित एक सी.डी. चलायी गयी। जो अभ्यासी तैयारी कर के आये थे उन्होंने "मेरे गुरुदेव" नामक पुस्तक से सम्बन्धित विभिन्न शीर्षकों पर वार्ता प्रस्तुत की। दोपहर में मणपाक्कम आश्रम में आयोजित यूरोपियन सेमिनार पर एक वीडियो दिखायी गयी तथा उसके पश्चात मुम्बई केन्द्र से आए २ युवा अभ्यासियों द्वारा "सत्संग" के महत्व" पर एक प्रशिक्षण सत्र का संचालन किया गया।

सत्र का आरम्भ एक प्रार्थना के साथ हुआ तथा उसके पश्चात अभ्यासियों को जोड़ों में बाँट दिया गया और उनसे नियमित रुप से सत्संग में शामिल नहीं होने के कारणों पर चिन्तन करने के लिए कहा गया। इसके पश्चात उन सभी जोड़ों ने अपने विचार पूरे समूह के समक्ष रखे। "सत्संग के महत्व" पर गुरुदेव के विचारों पर आधारित एक प्रस्तुती प्रस्तुत की गयी और उसके पश्चात आत्मचिंतन और विचार–विमर्श किया गया।

विरुदुनगर, तामिलनाडु

१६ अक्टुबर को विरुदुनगर आश्रम, चिन्नवल्लिकुलम में एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें स्थानीय एवं आस–पास के केन्द्रों से आए लगभग ४० अभ्यासी भाई–बहन सम्मिलित हुए। प्रातः ७ बजकर ३० मिनट पर सत्संग एवं नाशते के बाद अभ्यासी कार्यक्रम आरम्भ करने के लिये उत्सुक थे।

पिछले महीने हुए पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम के दौरान हुए विचार–विमर्श को जारी रखते हुए, अभ्यासियों को समूहों में बांट दिया गया एवं प्रत्येक समूह ने 'बेहतर अभ्यासी बनने के लिये स्वयं को बदलो' नामक विषय पर विचार–विमर्श किया। इस सामूहिक चर्चा के अन्त में प्रत्येक समूह के प्रतिनिधियों ने विचार–विमर्श की मुख्य बातों को संक्षेप में बताया।

विचार–विमर्श के दौरान कई विचार उभर कर सामने आये। इस कार्यक्रम में कई अभ्यासियों ने इस तथ्य को बताया कि उन्हें गुरुदेव की उपस्थिति तथा उनके मार्ग दर्शन का अनुभव हुआ। पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ ।

हुबली, उत्तरी कर्नाटक

१३ नवम्बर को हुए कार्यक्रम का संचालन युवा अभ्यासियों ने किया। इसमें उन्होंने अपने द्वारा रचित और व्यवहार में लाये विषयों को दर्शाया। सत्संग एवं नाश्ते के पश्चात अभ्यासियों एवं जिज्ञासुओं के बीच एक नकली वाद–विवाद दर्शाया गया। यह प्रस्तुती लगभग २ घंटे तक चली। यह एक विनोदपूर्ण, मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद प्रस्तुती थी।

अभ्यासियों को कुछ ऐसी स्लाईड्स दिखायी गयीं जिनका हमारी साधना पद्धति से कोई संबन्ध नहीं था। अभ्यासियों के समूह बना दिये गए और उन्हें उन स्लाईड्स के ऊपर सहज मार्ग के नारे लिखने को कहा गया। भोजन के पश्चात युवा अभ्यासियों द्वारा एक नाटिका प्रस्तुत की गयी जिसमें यह दिखाया गया कि सभी धर्मों के संस्थापकों ने एक ही बात कही है। इस नाटिका में चित्र प्रदर्शित किए गए और पृष्ठभूमि में संगीत भी सम्मिलित किया गया था। कार्यक्रम का सभी लोगों ने आनन्द उठाया।

बेल्लारी, उत्तरी कर्नाटक

६ नवम्बर को सुबह के सत्संग के बाद अभ्यासी एवं बच्चे 'सृष्टि गार्डन' गये। बेल्लारी केन्द्र के ३ अभ्यासियों ने क्रेस्ट खड़गपुर में तेलगु में हुए चरित्र निर्माण प्रक्षिण कार्यक्रम में भाग लिया था और उन्होंने कार्यक्रम के विषय में एवं एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के महत्व को बताया। इसके बाद अभ्यासियों ने किसी भी एक विषय को उठाकर उस पर बोलने के कार्यक्रम में भाग लिया। भोजन के पश्चात बच्चों ने एक प्रश्नोंत्तर कार्यक्रम और उसके बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का समापन शाम ४ बजे के सत्संग के साथ हुआ।

विरुधुनगर

बेल्लारी

लय योग आश्रम में उद्घाटन समारोह

सारनाथ, वाराणसी

गुरुदेव ने ४ दिसम्बर को चेन्नई और वाराणसी के बीच सजीव वीडियो लिंक के द्वारा लय योग आश्रम में नवनिर्मित ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया। इस अवसर पर सचिव भाई उमाशंकर बाजपेयी, न्यायधीश आर.आर.के. चतुर्वेदी, भाई आशीष सिंह, भाई ए.के.गर्ग और भाई वाई.एन.प्रसाद उपस्थित थे।

सुबह ६ बजकर ३० मिनट पर लगभग १००० अभ्यासी ध्यान कक्ष में उपस्थित थे। जैसे ही गुरुदेव सजीव स्क्रीन पर दिखायी दिए, समूचा कक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। गुरुदेव को देखकर प्रत्येक अभ्यासी अत्यन्त प्रसन्न था। गुरुदेव ने भाई बाजपेयी को अनावरण पट्टिका का पर्दा हटाने का निर्देश दिया, उसके पश्चात उन्होंने ध्यान कक्ष को बाबूजी महाराज को समर्पित किया और अभ्यासियों को कक्ष को ध्यान के लिए इस्तेमाल करने की आज्ञा दी। उन्होंने कहा कि "सहज मार्ग प्रेम का मार्ग है। हमें इस स्थान का उपयोग अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए करना चाहिए। सहज मार्ग में घृणा के लिए कोई स्थान नहीं है।" वीडियो संचार की प्रक्रिया के विषय में टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि इस वैज्ञानिक युग में हम अलग नहीं बल्कि एक हैं।

वाराणसी केन्द्र के प्रभारी डाक्टर प्रसन्ना कुमार ने सभी का स्वागत किया और गुरुदेव के द्वारा दिये गये आशिर्वाद के लिये उनका आभार व्यक्त किया। भाई बाजपेयी ने प्रेम के महत्व को विस्तार से समझाया। भाई एन. पी. सिन्हा ने लय योग आश्रम के इतिहास को संक्षेप में बताया। द्वितीय सत्र में अन्य केन्द्रों से आए अभ्यासियों ने वार्ताएं प्रस्तुत कीं और उसके पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम और शाम का सत्संग सम्पन्न हुआ।

घोषणाएं

चेन्नई के लिए नए केन्द्र प्रभारी

चेन्नई अब एक नया क्षेत्र (२सी) होगा और भाई कप्तान विनीत सिंह रानावत इसके प्रभारी होंगे।

एकोज़ समाचार पत्र के लिए अनुवादक

यदि आप अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित एकोज़ इंडिया समाचार पत्र का किसी क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद करने के कार्य में योगदान करना चाहते हैं, तो कृपया अपना ई–मेल इस पते पर भेजे: in.newsletter@srcm.org

आवेदन के लिए ई–मेल आई डी (Email ID)

कृपया ध्यान दीजिए कि हमें समाचार पत्र भेजते समय Yahoo और Rediffmail ID की ई–मेल सेवाओं में कठिनाई हो रही है इसलिये यदि आपने समाचार पत्र पाने के लिये इन दोनों सेवाओं में से किसी एक के द्वारा आवेदन किया है तो कृपया उसे निरस्त करके किसी अन्य ई–मेल सेवा द्वारा पुनः आवेदन करें। इस असुविधा के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

मणपाक्कम की यात्रा

बाबूजी मेमोरियल आश्रम, मणपाक्कम, में १७ से २४ जनवरी २०१२ के दौरान रूस और पिछले समय के सी.आई.एस. देशों से आने वाले अभ्यासियों के लिये एक गोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस सन्दर्भ में अन्य सभी केन्द्रों के अभ्यासियों से अनुरोध है कि उपरोक्त गोष्ठी के आयोजन के दिनों में मणपाक्कम आने की योजना न बनाएं।

नए प्रकाशन

पूज्य गुरुदेव ने नव वर्ष के दिन निम्नलिखित प्रकाशनों को ज़ारी किया ।

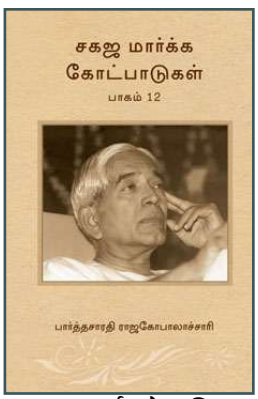

सहज मार्ग के सिद्धान्त
भाग–१२
तमिल

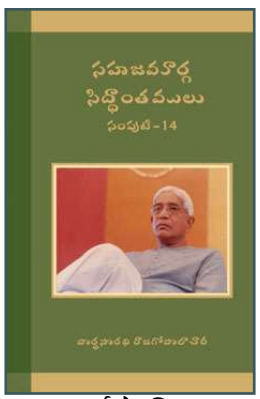

सहज मार्ग के सिद्धान्त
भाग–१४
तेलगु

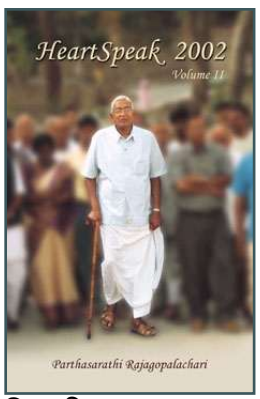

दिल की आवाज़ २००२
भाग–२
अंग्रेजी

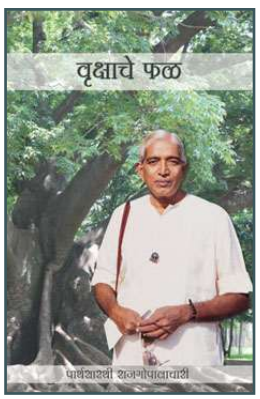

वृक्ष का फल
मराठी

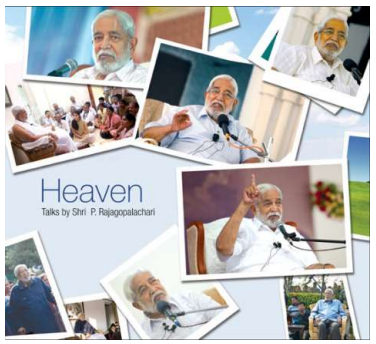

दिसम्बर २०१० में आयोजित यूरोपियन सेमिनार को सुन्दर रूप से संकलित करके प्रकाशित किया गया है। 'हेवन' (स्वर्ग) नामक इस डी.वी.डी. का विशेष प्रकाशन 'स्पिरिच्युल हायरारकी पब्लिकेशन ट्रस्ट' द्वारा किया गया है।

पुणे आश्रम

प्रकाश का केन्द्र

"प्रसन्नता– निश्चित रुप से हमें सदैव प्रसन्न रहना चाहिये, लेकिन हम गुरुदेव के विभिन्न संदेशों को भूल जाते हैं जिनमें उन्होंने कहा है कि एक अभ्यासी को सदैव प्रसन्न रहना चाहिए, न कि कुछ अवसरों पर, न कि संक्षिप्त मध्यावधियों के दौरान जबकि आप प्रसन्न होते हो क्योंकि आपके सामने पानशेत झील है और आप सूर्यास्त देख रहे हैं। बहुत खूब! हम सही अर्थ में प्रकृति प्रेमी हैं यदि हम अपनी आन्तरिक प्रकृति को प्रेम करते हैं जोकि हमारे हृदय में है, बाहरी प्रकृति जिसका एक प्रतिबिम्ब मात्र है या एक प्रतिबिम्ब हो सकती है यदि यह हमारे अन्दर है।"

पुणे और उसके आसपास जब सहजमार्ग परिवार में वृद्धि होना आरम्भ हो गया तब एक आश्रम की आवश्यकता महसूस की गयी। सन २००१ में एक आश्रम के निर्माण का प्रस्ताव गुरुदेव को प्रस्तुत किया गया जिसे उन्होंने तत्परता से स्वीकार कर लिया।

भूमि का पंजीकरण जनवरी २००१ में कराया गया और आश्रम का निर्माण २००४ के पूर्वार्ध में सम्पन्न कर लिया गया (सिवाय बाल केन्द्र भवन के, जिसका निर्माण जुलाई २००४ में सम्पन्न हुआ)। आश्रम सिंहगढ मार्ग के निकट एक शान्तिपूर्ण क्षेत्र में ३९१९ वर्ग मीटर की भूमि पर स्थित है।

आश्रम के निकट एक जल स्रोत है जोकि यहाँ के वातावरण को शीतल, शान्त और पवित्र बनाये रखता है। आश्रम पुणे रेलवे स्टेशन से लगभग १५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और यहाँ सड़क मार्ग और सार्वजनिक यातायात के साधनों द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है।

नांदेड़ आश्रम का पानशेत रिट्रीट केन्द्र से केवल १० किलोमीटर दूर होना स्वयंसेवकों के दोनों स्थानों के बीच के आवागमन को आसान बनाता है।

गुरुदेव फरवरी २००४ में पुणे आये थे और उन्होंने निर्माण कार्य के अन्तिम चरण को देखा था। उन्होंने केन्द्र प्रभारी को निर्माण कार्य के समापन के तुरन्त पश्चात सत्संग आरम्भ करने का आदेश दिया और इस प्रकार पहला सत्संग ४ अप्रैल २००४ को सम्पन्न हुआ।

आश्रम में २३२५ वर्ग फीट का एक ध्यान कक्ष है जिसमें लगभग २५० अभ्यासी बैठ सकते हैं। सन २००९ में २०० अतिरिक्त अभ्यासियों के बैठने का अस्थायी विस्तार किया गया। आश्रम में उपलब्ध सुविधाओं में एक रसोईघर, बालकेन्द्र, शौचालयों का स्थान(प्रथम तल पर आश्रम की देखभाल करने वाले का कमरा) और कारें खड़ी करने के स्थान इत्यादि शामिल हैं । आश्रम भवन के चारों ओर हरे भरे बगीचे और विभिन्न प्रकार के फलों के पेड़ हैं ।

गुरुदेव ने अपने कई दौरों के दौरान इस आश्रम में सत्संग कराए हैं। भविष्य की आवश्यक्ताओं को ध्यान में रखते हुए आश्रम रख–रखाव समिति एक विस्तार योजना का प्रारूप तैयार कर रही है जिसे गुरुदेव के समक्ष उनकी स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किया जाएगा ।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.